एमपीएस–004 : तुलनात्मक राजनीति : मुद्दे एवं प्रवृत्तियाँ
(अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य)

पाठ्यक्रम कोड: एमपी[illegible]
सत्रीय कार्य कोड: एएसएसटी / टीएमए / 20[illegible]
पूर्णांक: 100

किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

भाग – I

1. तुलनात्मक पद्धति क्या है? राजनीति के अध्ययन में तुलनात्मक पद्धति के महत्त्व और [illegible] का परीक्षण कीजिए।

2. तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में राजनीतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण क्या है? व्याख्या [illegible] कि किस प्रकार इसे राजनीतिक विश्लेषण में लागू किया जाता है।

3. किसी राज्य की आंतरिक कार्यप्रणाली पर वैश्वीकरण के प्रभावों की चर्चा कीजिए।

4. राष्ट्रवाद से आप क्या समझते हैं? राष्ट्रीय पहचान के बुनियादी लक्षणों का वर्णन कीजिए।

5. निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में संक्षिप्त लेख लिखिए:

   क) नागरिक समाज और उसका महत्व।
   ख) संविधानवाद।

भाग – II

6. 'दुनिया में कहीं भी गरीबी हर जगह समृद्धि के लिए खतरा है'। टिप्पणी कीजिए।

7. राजनीतिक दल को परिभाषित कीजिए। एक लोकतांत्रिक राजव्यवस्था में राजनीतिक दल [illegible] उद्देश्य की पूर्ति करते हैं?

8. पर्यावरणीय बहस में प्रमुख मुद्दों पर विकासशील देशों की स्थिति का वर्णन और [illegible] कीजिए।

9. समुदाय क्या है? व्याख्या कीजिए कि क्यों और कैसे 'सामुदायिक पहचान' का निर्माण [illegible]

10. निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में संक्षिप्त लेख लिखिए:

    क) यूरोप में क्षेत्रीय एकीकरण।
    ख) राज्य का नारीवादी दृष्टिकोण।

MPS - 004

भाग - I

प्रश्न - 3 किसी राज्य की आँतरिक कार्यप्रणाली पर वैश्वीकरण के प्रभावो की चर्चा कीजिए ?

उ० - 3 भूमंडलीकरण उस पूँजीवादी विस्तार की ऐतिहासिक प्रक्रिया का, लक्ष्य, उत्पाद है, जिसने यूरोप से आरंभ होकर पूरे विश्व को अपने दायरे मे लिया। भूमंडलीकरण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की समाप्ती और नये के कारण आरंभ हुआ तथा सोवियत यूनियन के पतन के बाद विकसित हुआ।

* भूमंडलीकरण के प्रति दृष्टिकोण :-

कुछ विद्वानो का कथन है की आर्थिक भूमंडलीकरण, सामाजिक और राजनैतिक संगठनो द्वारा अंतराष्ट्रीय नागरिक समाज तथा राष्ट्र राज्य सरकार के नये - नये रूप उत्पन्न कर रहा है और अन्ततः यह परंपरागत राष्ट्र राज्य का स्थान ले लेगा और यह विश्व समाज की प्राथमिक राजनीतिक इकाई और आर्थिक इकाई का स्थान ले लेगा।

• राज्य के आंतरिक कार्यों पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

लोकतांत्रिक निर्णय करना : लोकतांत्रिक व्यवस्था की सर्वोच्चता के कारण राज्यो को भी लोकतांत्रिक निर्णय करना पड़ता है पूरी तरह से कोई भी राज्य अंतराष्ट्रीय

Topic ______ Date ______ Page No. ______

कानून को चुनौती नहीं दे सकता।

संजातीय पुनरुत्थान : वर्तमान समय में संजातीय पुनरुत्थान की भावना का उदय हुआ है इसके कारण सोवियत यूनियन बिखर गया और पूर्वी यूरोप के राज्य सोवियत यूनियन की अधिनायकवादी और अप्रजातांत्रिक दलीय व्यवस्था के कारण उसके प्रभाव से मुक्त हुए परंतु सोवियत यूनियन इसलिए भी बिखरी की कजाक, किर्गिज तथा अन्य कबीलो और जातियो मे संजातिय भावना विकसित हो गई।

भारत मे भी उत्तरांचल, छत्तीसगढ और झारखण्ड आदि राज्य का निर्माण करना पड़ा यद्यपि भाषा की दृष्टी से इन सभी राज्यो की भाषा हिन्दी थी और ऐतिहासिक धार्मिक दृष्टि से उत्तरांचल की उत्तर प्रदेश से, छत्तीसगढ़ की मध्य प्रदेश से और झारखण्ड की बिहार से कोई महत्वपूर्ण विभिन्नता नही था।

ब्रिटेन जैसे एकल राज्य को स्कॉटलैण्ड व वेल्स को स्थानीय अधिकार देने पड़े तथा वहाँ विधानसभाएँ स्थापित करनी पड़ी। युगोस्लाविया चेकोस्लोवाकिया आदि पूर्णतया बिखर गए और श्री लंका मे हिंसात्मक संघर्ष चल रहा है सबसे बड़ी बात यह है की अब आंतकवाद ने अंतर्राष्ट्रीय रूप ले लिया है और इसको दमन के लिए भूमंडलीकरण प्रभावशाली व अवश्यम्भावी हो गया है। आतंकवादी अबू सलेम और मोनिका बेदी के प्रत्यर्पण के लिए भारत को पुर्तगाल का सहारा लेना पड़ा यद्यपि भारत

प्रकरण के कारण दोनों देशों के सम्बन्ध मधुर नहीं थे। आतंकवादी एक देश में अपराध करके दूसरे देश में पलायन कर जाते हैं अतः आतंकवादी गतिविधियों के दमन और रोकथाम के लिए भी अंतर्राष्ट्रीय कानून व भूमंडलीकरण का महत्व बढ़ गया है। अंतर्राष्ट्रीय संस्था, विश्व बैंक, एशियन बैंक, डेवलपमेंट बैंक, अंतर्राष्ट्रीय पोस्टल यूनियन और विभिन्न संगठनों जैसे यूरोपियन यूनियन, सार्क, अफ्रीका व दक्षिणी अमेरिकी संगठन आदि भी भूमंडलीकरण के लिए सहायक बने तथा विश्व व्यापार संगठन ने भूमंडलीकरण को आवश्यक बना दिया परन्तु भूमंडलीकरण में भी राज्यपूर्ण सम्प्रभुता संपन्न है। अतएव भारत पाकिस्तान आदि ने सी.टी.बी.टी. परमाणु निषेध संधि आदि पर हस्ताक्षर नहीं किए।

उत्तर कोरिया और ईरान अपनी मनमानी कर रहे हैं यहाँ तक की ईरान ने इजराइल के अस्तित्व को समाप्त करने की धमकी दे दी। जबकि संयुक्त राज्य संघ के एक सदस्य राष्ट्र द्वारा दूसरे सदस्य राष्ट्र को धमकी देना और विश्व शांति को नष्ट करना पूर्णतः गैर कानूनी, अनुचित और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों व संयुक्त राष्ट्रीय संघ द्वारा दूसरे संघ के चार्टर का ~~उल्लंख~~ उल्लंघन है परन्तु राज्य के सम्प्रभुता ~~सिद्ध~~ सिद्धांत के कारण समस्त विश्व को चुपचाप यह सहन करना पड़ा।

Topic _____ Date _____ Page No. _____

यद्यपि सम्प्रभुता सिद्धांत आंतरिक व्यवस्था पर लागू होता है। वैदेशिक और अंतराष्ट्रीय क्षेत्र में नहीं अतः यह कहा जा सकता है की भूमंडलीकरण की सीमित प्रभाव पड़ा है पर राज्यो की सम्प्रभुता पूर्ण रूप से अभी भी कायम है।

प्र05 निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में संक्षिप्त लेख लिखिए :

(क) नागरिक समाज और उसका महत्व

(ख) संविधानवाद

उ0 5 (क) नागरिक समाज और उसका महत्व

नागरिक समाज के अंतर्गत परिवार के बाहर की वे सभी संस्थाएँ आती है, जिन्हे व्यक्ति अपने हितो संवैधान के उद्देश्य से बनाते है। इसके अंतर्गत सभी संस्थाएँ विशेषकर स्वयंसेवी, सभ्य सामाजिक आंदोलन तथा सार्वजनिक संचार के रूप सम्मिलित है। इसके अंतर्गत मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा, गिरिजाघर, रामलीला कमेटियाँ, आर्य समाज, सनातन धर्म सभा तथा जातिगत संस्थाएँ जैसे ब्राह्मण समाज, लोधी समाज, नारी समाज, धर्म शाला, विश्वविद्यालय, अध्यापको और वकीलो और डाक्टरो के संगठन तथा वे सभी संगठन आते है जो विभिन्न व्यक्ति अपने हितो की रक्षा के लिए बनाते है। सारांश रूप में राज्य और सरकार को छोड़कर सभी संगठन नागरिक समाज के अंतर्गत आते है। ये सामाजिक संगठन व्यक्ति और राज्य के मध्य की स्थिती होते है इसके अंतर्गत पारिवारिक जीवन तथा आध्यात्मिकता आदी नही आती है।

नागरिक समाज की उल्लेखनीय विशेषताएँ :-
नागरिक समाज व्यक्तिगत या निजी संबंधो की अपेक्षा सार्वजनिक लक्ष्यो से

Writo-Line

संबंधित होता है। नागरिक समाज का लक्ष्य संगठन के रूप में शक्ति ग्रहण न कर ~~शक्ती~~ शक्ति की संरचना में सुधार लाना होता है।

(1) ऐतिहासिक विकास :- इसका ऐतिहासिक विकास अत्यन्त शीघ्रता से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ। क्यों की साम्यवादी देशों में राज्य का वर्चस्व था और केवल एक साम्यवादी दल का प्रभुत्व था। अतएव नागरिकों को सामाजिक कार्यों में भाग लेने का अवसर नहीं मिल पाता था। प्रजातंत्रवादी राज्यों में धार्मिक संगठन सामाजिक संगठन कार्य के अनुसार संगठित होते थे। परंतु साम्यवादी राज्यों में इनको रोका जाता था अतएव जनता में असंतोष उत्पन्न हो गया और यह असंतोष निरंतर बढ़ता ही चला गया। अतएव सोवियत यूनियन तथा उसके अधीन पूर्वी यूरोप के देशों में इतना असंतोष बढ़ा की वे सोवियत यूनियन से पृथक हो गए। और सोवियत यूनियन स्वयं 16 देशों में बिखर गया। अतएव सुदृढ़ नागरिक समाज का प्रभाव बहुत अधिक माना जाने लगा है।

(2) प्रमुख अंशदाता :- नागरिक समाज के विभिन्न व्यक्तियों ने और विचारकों ने योगदान दिया है। रोमन साम्राज्य में इसके विकास का आरंभ हुआ।

(3) प्रतिकूल तत्व :- हॉब्स व लॉक ने राज्य को सामाजिक समझौते पर आधारित बताया है। हॉब्स ने जीवन की रक्षा और लॉक ने अधिकारों की रक्षा, संपत्ती की रक्षा इनके शांति व्यवस्था के लिए राज्य के अधिकार को स्वीकार किया है।

अतः इन्होंने नागरिकता की भावना को विकसित किया। प्रो० राजनीतिक अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने राज्य के नागरिक समाज के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। इसने व्यक्तिवाद संपत्ति तथा बाजार को प्राथमिकता देकर नागरिक समाज का विकास किया तथा राज्य की शक्ति की सीमाएँ निर्धारित की।

* नागरिक समाज के बारे मे मार्क्स के विचार:

मार्क्स का कथन है की नागरिक समाज बुर्जवा वर्ग के साथ आया तथा उसके अनुसार यह झगड़ों तथा विवादों की जड़ है जिनकी अभिव्यक्ति प्रतिस्पर्धा, अहंकार और निजीकरण के रूप मे होती है। उसने वास्तविक मानवता पर आधारित समाज की धारणा प्रस्तुत की है।

* नागरिक समाज के बारे मे ग्रामस्की के विचार:

ग्रामस्की के अनुसार नागरिक समाज वर्चस्व तथा आधिपत्य का एक भाग है। जिसमे राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दोनों नेतृत्व निहित होते है। ग्रामस्की ने नागरिक समाज की भूमिका को महत्व दिया है। उसके अनुसार संस्थाएँ नागरिकों को समाज मे व्यवहार के नियमों से परिचित कराती है और उन्हे यह शिक्षा देती है की शासक वर्ग के प्रति स्वभाविक सम्मान का भाव रखना चाहिए।

Topic _____ Date _____ Page No. _____

(ख) संविधानवाद :- शासकों की निरंकुशता को रोकने के लिए संविधानवाद आरंभ हुआ। इंग्लैण्ड में इसका आरंभ मैगना कार्टा पिटिशन ऑफ राइट्स और 1688 के बिल ऑफ राइट्स आदि के द्वारा हुई अतः राजा की निरंकुशता धीरे-धीरे समाप्त हो गई। और संवैधानिक शासन स्थापित हो गया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने विचारों के अनुसार संविधान बनाया और संविधान को सर्वोच्चता प्रदान की। फ्रांस की राज्य क्रांति ने स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व की घोषणा द्वारा विश्व में प्रजातांत्रिक व संवैधानिक शासन को सर्वोपरि और सर्वव्यापी बना दिया।

* संविधानवाद का अर्थ :- राज्य में किस प्रकार के अधिकरण है? व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के क्या अधिकार है? शासन किस प्रकार से संचालित किया जाना चाहिए? किसको क्या शक्तियाँ और अधिकार है? ये सभी विषय संविधान के अंतर्गत आते है।

संविधान के नमूने :-

1. संविधान का ब्रिटिश नमूना :- इंग्लैण्ड का संविधान ऐतिहासिक परंपराओं पर आधारित है। यहाँ की संसद सबसे प्राचीन और सर्वोच्च है। ब्रिटिश संविधान एकात्मक माना जाता था परन्तु अब स्कॉटलैण्ड व वेल्स आदि में भी विधानसभाएँ स्थापित हो गई है। जिससे ब्रिटेन के एकात्मक शासन को धक्का लगा है।

o-Line

अमेरिकी नमूना : अमेरिकी शासन संघात्मक अध्यक्षात्मक शक्ति के पृथक-करण के सिद्धांत और संवैधानिक सर्वोच्चता पर आधारित माना जाता है।

यूरोपिय महाद्वीप की व्यवस्थाएँ : स्विट्जरलैंड विश्व में सबसे अधिक प्रजातांत्रिक देश माना जाता है। क्योंकि यहाँ जनता को प्रत्यक्ष रूप से शासन में भाग लेने का अधिकार है। जर्मनी में (संघात्मक) चांसलर व्यवस्था को अपनाया है जिसमें चांसलर की नियुक्ति लोकसभा करती है और उसकी सहमती राष्ट्रपति देता है। फ्रांस के पाँचवे गणतंत्र में राज्य अध्यक्ष अर्थात राष्ट्रपति संविधान का संरक्षक होता है। कई देशों ने तानाशाही को अपनाया है और कई देशों जैसे नेपाल, साऊदी अरब, जार्डन तथा भूटान में राजतंत्रात्मक व्यवस्था है परन्तु इंग्लैण्ड और जापान में राजतंत्रात्मक व्यवस्था होते हुए भी संसद को सर्वोच्चता प्राप्त है।

* संविधान निर्माण में विकासात्मक भूमिका —

ब्रिटेन की अध्यक्षात्मक और संघात्मक व्यवस्था संयुक्त राज्य अमेरिका की तरह मानी जाती है तथा फ्रांस जर्मनी संविधानवाद का नमूना माने जाते हैं। चीन की न्यायिक व्यवस्था को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

* संविधानवाद व राज्य निर्माण : संविधान मुख्य रूप से राज्य और नागरिक समाज को पृथक करता है और शासन की निरंकुशता पर रोक लगाता है।

राज्य और नागरिक समाज :- धर्म नस्ल भाषा क्षेत्रियता जाति आत्मनिर्णय और पहचान आदि के कारण अधिकारों की माँग के कारण अशांति व्याप्त है।

कानून का शासन :- कानून के शासन के अंतर्गत न्यायधीश विधि द्वारा, निर्मित कानूनों द्वारा निर्णय करते हैं। परंतु जहाँ न्यायधीश निर्वाचित होते हैं वहां विलम्ब व भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाता है। कानून के शासन के लिए एक स्वतंत्र न्यायपालिका की जरूरत होती है।

सेना और नौकरशाही :- वर्तमान समय में बहुत से राज्यों में सैनिक सरकार हैं। जैसे पाकिस्तान म्यांमार आदि। प्रायः सभी देशों में नौकरशाही का बोलबाला है। नौकरशाही राज्य चलाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

प्राचीन तथा मध्य युग में जब शासन निरंकुश राजाओं के हाथों में होता था, राज्यों के संविधान नहीं हुआ करते थे। शासक अपनी इच्छानुसार सब कुछ बदलता रहता था। इसलिए इस प्रकार के राज्य के लिए संवैधानिक शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकतंत्र में शासन जनता के हाथों में होता था। इसलिए शासक वर्ग स्थायी व निरंकुश नहीं हो सकता।

प्र० 6 दुनिया में कहीं भी गरीबी हर जगह समृद्धि के लिए खतरा है' टिप्पणी कीजिए

उ० 6 **निर्धनता : एक वृहद् दृष्टिकोण** - साधारण रूप से जिस व्यक्ति की न्यूनतम आवश्यकता रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकता पूरी न हो, अर्थात तथा आपातकालीन परिस्थितियों जैसे रोग आदि की दशा में उपचार आदि के साधन उपलब्ध न हो निर्धन माना जाता है। परन्तु विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने इस संबंध में विभिन्न दृष्टिकोण अपनाये हैं। अधिकांश अर्थशास्त्रियों ने कहा है कि जो व्यक्ति न्यूनतम रूप से स्वीकृत विभिन्न आर्थिक तथा गैर-आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ती में असफल रहता है, वह निर्धन माना जा सकता है।

अमर्त्य सेन ने मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पाने को निर्धनता माना है। अकाल की स्थिति में मृत्यु को सभी ने निर्धनता स्वीकार किया है।

निर्धनता और असमानता - निर्धनता और असमानता के बीच अंतर है परन्तु ये एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। विश्व स्तर पर जिसकी आय एक डॉलर प्रतिदिन अर्थात् रूपये से कम हो उसे निर्धन माना जाता है।

विकास निर्भरता व असमानता - वैज्ञानिक उपकरणों ने असमानता को बढ़ावा दिया है। अगर एक कृषक के पास ट्यूबवेल, ट्रैक्टर आदि है, तो वह धनी है। लेकिन हल बैल व एक दो बीघा जमीन वाला किसान निर्धन है।

Writo-Line

इसी प्रकार जिस परिवार के पास बँगला, कार
टीवी, फ्रिज व वाशिंग मशीन, टेलीविजन
आदि है उसे धनी तथा कार के स्थान पर
स्कूटर, साधारण छोटा मकान आदि रखने वाले
को मध्यम वर्ग का और जिसके पास केवल
आवश्यक बर्तन और साधारण वस्त्र आदि है,
उन्हे निर्धन माना जाएगा।

विकास के साथ समृद्धि बढ़ती है,
परन्तु विकास की प्रक्रिया में कुछ व्यक्ति
अत्यन्त धनी हो जाते हैं, परन्तु असमानता
के कारण कुछ व्यक्ति अत्यन्त निर्धन हो
जाते हैं। जैसे भारत में पाँच सितारा होटल
कारों, ट्रैक्टरों, स्कूटरों की संख्या में
अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, पर दूसरी ओर
निर्धनता और भुखमरी भी बढ़ी है। कृषक
निर्धनता के कारण आत्महत्या कर रहे हैं।
उत्तर पूर्वी राज्यों व आंध्र उड़ीसा, छत्तीसगढ़
व झारखंड आदि में ~~भुखम~~ भुखमरी के कारण
होने वाली मौतों की संख्या बढ़ रही है
क्योंकि यहाँ निर्धन व्यक्ति के पास जीविका के
साधन नहीं हैं और इन्हे बेकारी भत्ता
नहीं मिलता और न ही इस ओर कोई ध्यान
दिया जा रहा है।

संस्कृत मे कहा गया है कि विभुक्षम्
किम न करोति पापम्। भूखा मनुष्य कौन
पाप नही कर सकता। अतः अपराधो मे
वृद्धि होती जा रही है। भारत में एक ओर
अत्यंत संपन्नता तो एक ओर घोर निर्धनता है।
अतः यह आवश्यक है कि विकास के साथ-साथ
असमानता को दूर किया जाए।

भूमंडलीकरण, निर्धनता एवं मानव विकास

भूमंडलीकरण के कारण विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विश्व व्यापार संगठन, तथा विकसित देशों द्वारा कम विकसित देशों को सुझाव दिया जाता है कि आर्थिक गतिविधियों में राज्य सरकार का हस्तक्षेप कम करे और बाजार की शक्ति की बढ़ती हुई विशाल भूमिका को सुनिश्चित करें। क्योंकि राज्य सरकारों के हस्तक्षेपों करों के कारण वस्तुएँ मँहगी हो जाती हैं तथा नौकरशाही करों द्वारा देश के विकास व गरीबी उन्मूलन के कार्यों को रोक देती है।

धार्मिक संस्थान व दान की गतिविधियाँ निर्धनता को समाप्त करने में सहायता देती हैं। पहले लोग अनाथालय, यतीमखाना, विधवाश्रम धर्मशाला व निःशुल्क शिक्षा के लिए पाठशाला खोलते थे तथा त्योहार के अवसर पर हजारों मनुष्यों को जलपान कराते थे, अनेक सम्भ्रांत परिवारों द्वारा भी त्योहारों पर भूखों को भोजन, निर्धन महिलाओं को साड़ियाँ और जाड़े में कम्बल बाँटे जाते थे। ईसाई मिशनरी भारत में अस्पताल व स्कूल खोलते हैं तथा नर्स व विद्यार्थियों को सक्षम बनाते हैं ताकि आगे चलकर ये शिक्षक नर्स या डॉक्टर बनकर निर्धनता को दूर कर सकें। इस्लाम धर्म में आय का चालीसवाँ हिस्सा खैरात अर्थात् दान करना धर्म का अंग है तथा अनाथों की सहायता करना असहाय व्यक्तियों की रक्षा करना और भूखों को भोजन देना परम कर्तव्य माना गया है।

Topic _____ Date _____ Page No. _____

भारत मे अनुत्पादक कार्यो पर केंद्र सरकार का व्यय 70 हजार करोड़ रूपये से भी अधिक है। अतः विश्व बैंक आदि का कहना है कि भारत सरकार अनुत्पादक व्यय कम करके गरीबी दूर करने और भुखमरी समाप्त करने का प्रयास करे तथा शिक्षा और स्वास्थ्य पर व्यय करके जनता को अधिक उत्पादन के लिए सक्षम बनाए और देश की उन्नति करे। भारत सरकार की नीतियो के कारण प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण धनी भारत मे निर्धनता है। असमानता के कारण कुछ लोग खरबपति है परन्तु बहुसंख्यक जनता निर्धन है। अतः असमानता समाप्त करके निर्धनता को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

प्र० 7 राजनीतिक दल को परिभाषित कीजिए। एक लोकतांत्रिक राजव्यवस्था में राजनीतिक दल किस उद्देश्य की पूर्ति करते हैं?

उ० 7 राजनीतिक दल की परिभाषा :- मानव एक विवेकशील प्राणी है और मानव की इस विवेकशीलता के कारण एक ही प्रकार की समस्याओं के संबंध में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न प्रकार से विचार किया जाता है। विचारों की इस भिन्नता के साथ ही साथ अनेक व्यक्तियों में अप्रारभूत बातों के संबंध में विचारों की साम्यता पाई जाती है। विचारों की समानता रखने वाले ये व्यक्ति अपनी समान्य विचारधारा के आधार पर शासन शक्ति प्राप्त करने और अपनी नीति को कार्यरूप में परिणत करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। और इस उद्देश्य को दृष्टि में रखकर उनके द्वारा जिन संगठनों का निर्माण किया जाता है उन्हें ही राजनीतिक दल कहा जाता है। राजनीतिक दल की परिभाषा के संबंध में विभिन्न विचारकों ने विभिन्न मत प्रस्तुत किए हैं —

एडमण्ड बर्क के मतानुसार "राजनीतिक दल ऐसे लोगों का समूह होता है, जो किसी ऐसे सिद्धांत के आधार पर जिस पर वे एकमत हों अपने सामूहिक मत द्वारा जनता के हित में काम करने के लिए एकता सूत्र में बंधे होते हैं।

गेटल के अनुसार "राजनीतिक दल न्यूनाधिक संगठित उन नागरिकों का

Writo-Line

Topic Date Page No.

समूह होता है, जो राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य करते है और जिनका उद्देश्य अपने मतदान बल के प्रयोग सरकार पर नियंत्रण करना व अपनी सामान्य नीतियों को क्रियान्वित करना होता है।

गिलक्राइस्ट के शब्दों में "राजनीतिक दल की परिभाषा उन नागरिकों के संगठित समूह के रूप में की जा सकती है, जो राजनीतिक रूप से एक विचार के हो, और जो एक राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य कर के सरकार पर नियंत्रण करना चाहते हो।

इसी प्रकार मेकाइवर के शब्दों में राजनीतिक दल एक ऐसा समुदाय है, जो किसी ऐसे सिद्धांत अथवा ऐसी नीति के समर्थन के लिए संगठित हुआ हो, जिसे वह वैधानिक साधनों से सरकार का अधिकार बनाना चाहता हो।

* प्रजातंत्र में राजनीतिक दलों के कार्य तथा भूमिका -:

① लोकमत का निर्माण -: वर्तमान समय में राज्य संबंधी विषय बहुत जटिल है और व्यापक होते है और साधारण व्यक्ति के लिए इस प्रकार के विचार और इन्हे समझ सकना संभव नहीं होता है। ऐसी स्थिती में राजनीतिक दल सार्वजनिक समस्याओं को जनता के समक्ष इस रूप में प्रस्तुत करते है कि साधारण जनता उन्हे सरलता से समझ सके। जब विभिन्न राजनीतिक दल समस्याओं के संबंध में अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन करते है, तो साधारण जनता इन समस्याओं को भली प्रकार

Writo-Line

विशिष्टता निर्माण :- प्रत्येक सभ्यता जाति, प्रजाति, नस्ल रंगभेद लिंग संबंधित भिन्नताओं पर आधारित होती है। इस संदर्भ में राजनीति और कुछ नहीं केवल कुछ विशिष्ट वर्गों द्वारा शक्ति सीमित करने तथा आज्ञा पालन करवाने का मुख्य साधन रही है। यह सार्वजनिक कल्याण का माध्यम नहीं रही है। दूसरे शब्दों में राजनीति हमेशा एक सकारात्मक गतिविधि नहीं रही। अतः विशिष्टता निर्माण की प्रक्रिया तथा इसके संरक्षण के आधार नकारात्मक रहे हैं।

20वीं शताब्दी के साम्राज्यवादी देशों के विरुद्ध उपनिवेशवादी विरोध तथा उत्तरार्द्ध में प्रजातांत्रिक उदारवादी देशों में नागरिक, सामाजिक अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं। व्यापक स्तर पर यह अभिव्यक्ति औपनिवेशिक देशों में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के रूप में तथा उदारवादी देशों में अनेक सामाजिक आंदोलनों जैसे नारी मुक्ति आंदोलन, जनतंत्रीय आंदोलन, पर्यावरण आंदोलन आदि में स्पष्ट हुई। इन सभी आंदोलनों के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :-

(i) किसी भी तरह की आरोपित विशिष्टता का विरोध करना तथा

(ii) किसी भी तरह की विशिष्टता संबंधी भिन्नता को उचित ठहराना।

इस प्रक्रिया से निकलने वाले संघर्ष, विशिष्टता के संघर्ष थे, तथा इन संघर्षों ने कई प्रधान समूहों को इस व्यापक विभिन्नता के

समझ कर निर्णय कर सकती है और लोकमत का निर्माण हो सकता है।

(2) चुनावों का संचालन -: जब मताधिकार बहुत सीमित था और निर्वाचकों की संख्या बहुत कम थी, तब स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़े जा सकते थे, लेकिन अब वयस्क मताधिकार के प्रचलन के कारण स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ना लगभग असंभव हो गया है। ऐसी स्थिति में राजनीतिक दल अपने दल की ओर से उम्मीदवारों को खड़ा करके उनके पक्ष में प्रचार करते हैं। चुनाव के समय होने वाला भारी खर्चा इन राजनीतिक दलों द्वारा ही किया जाता है। यदि राजनीतिक दल न हों, तो आज के विशाल लोकतंत्रात्मक राज्यों में निर्वाचन का संचालन लगभग असंभव ही हो जाएगा।

(3) सरकार का निर्माण -: निर्वाचन के बाद राजनीतिक दलों के द्वारा ही सरकार का निर्माण किया जाता है। अध्यक्षात्मक शासन-व्यवस्था में राष्ट्रपति अपने विचारों से सहमत व्यक्तियों की मंत्रिपरिषद् का निर्माण करके शासन का संचालन करता है। संसदात्मक शासन में जिस राजनीतिक दल को व्यवस्थापिका में बहुमत प्राप्त हो, उसके प्रधान द्वारा मंत्रीपरिषद का निर्माण करते हुए शासन का संचालन किया जाता है।

(4) शासन सत्ता को मर्यादित करना -: शासन व्यवस्था में बहुसंख्यक राजनीतिक दल के साथ-ही-साथ अल्पसंख्यक राजनीतिक दल, यह विरोधी दल भी बहुत अधिक महत्व रखते हैं।

Writo-Line

Topic _____ Date _____ Page No. _____

प्रश्न-9 समुदाय क्या है? व्याख्या कीजिए कि क्यों और कैसे 'सामुदायिक पहचान' का निर्मिति होती है?

उ० 9 समुदाय की पहचान की परिभाषा एवं संरचना व्यक्तियों का जो समूह अपनी विचारधाराओं रीति रिवाजों, वंश या धर्म आदि के आधार पर अपनी विशिष्टता का दावा करके अपनी अलग पहचान बनाने की चेष्टा करता है, वह समुदाय की पहचान के अंतर्गत आता है। जैसे — फिलिस्तीनी मुस्लिम अरब व यहूदी अपनी पृथक विशिष्टता के आधार पर पृथक पहचान का दावा करता है, समुदाय के अंतर्गत आते हैं। श्रीलंका में रहने वाले तमिल विशिष्टता के आधार पर पृथक पहचान का दावा करते हैं। भिन्नता और विशिष्टता का ज्ञान ही समुदाय पहचान का आधार है।

समुदाय की पहचान के लक्षण :- कुछ पहचान स्वभाविक होती है, जिन्हे बदला नही जा सकता, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका का मूल निवासी। वहाँ यूरोप से आए हुए नवीन नागरिक तथा अफ्रीका से लाये गये हब्शी गुलामों मे भिन्नता होते हुए भी एकता है, लेकिन ईरान के शिया मुसलमानो व इराक के सुन्नियो मे, या फ्रांस के रोमन कैथोलिक तथा प्रोटस्टेंट मे या इंग्लैंड के प्यूरिटन व एंग्लिकन चर्च को मानने वालों के मध्य संघर्ष चल रहा था, जो अब समाप्त हो गया है, क्योंकि उनमे विशिष्टता का अभाव था, परन्तु पाकिस्तान मे पश्चिमी पाकिस्तान व पूर्वी पाकिस्तान के मध्य विशिष्टता के संघर्ष के कारण अंततः बांग्लादेश का निर्माण हुआ।

Writo-Line

Topic _____ Date _____ Page No. _____

के संदर्भ में सार्वजनिक समझौते करने तथा अपनी राष्ट्रीयता विशिष्टता को पुनः परिभाषित करने का अवसर प्रदान किया।

विशिष्टता संबंधी भिन्नता को मान्यता दिलाने के संदर्भ में प्रायः तीन प्रकार की मुख्य मांगें निम्नलिखित हैं —

(i) सांस्कृतिक विभिन्नता

(ii) बहुसांस्कृतिक नागरिकता

(iii) बहुराष्ट्रीय संवैधानिक संगठन

पहली प्रकार की मांग मुख्य रूप से संस्कृति संबंधी विभिन्नता को लेकर है। इसका मानना है कि सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रत्येक समूह को दूसरे समूहों की सांस्कृतिक विरासतों तथा भिन्नता का आदर करना चाहिए तथा उसे मान्यता भी देनी चाहिए।

दूसरी प्रकार की मांग बहुसांस्कृतिक तथा बहुप्रजातीय नागरिकता है। इसका संबंध सामाजिक स्तर पर निजी, सार्वजनिक तथा शैक्षिक संस्थाओं में भाग लेना चाहते हैं।

विशिष्टता संबंधी तीसरी मांग यह है - बहुराष्ट्रीय अथवा बहुजनवादी संवैधानिक संयोजन। इसमें किसी भी बहुराष्ट्रीय राज्य के अंदर रहने वाली पीड़ित व अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताएँ तथा जनजातीय समूह एक विशिष्ट राष्ट्रीयता अथवा जनसमूह के रूप में मान्यता का अधिकार चाहते हैं।